पद्मपुराण–उत्तरखण्डोक्त

कायस्थानांसमुत्पत्ति

द्वादशगौडब्राह्मणोत्पत्ति

(भाषा–टीका सहित)

अनुवाद, लेखन एवं सम्पादन

डा० इन्द्रजीत शुक्ल
'अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य'
श्रीगोरखनाथ संस्कृत उ० मा० विद्यालय,
गोरखपुर, (उत्तर प्रदेश)

मनोज कुमार श्रीवास्तव
'संस्थापक एवं अध्यक्ष'
सनातन धर्म ट्रस्ट (रजि०)
गोरखपुर, (उत्तर प्रदेश)

डॉ० श्रीमती रीता दूबे
'एसोशिएट प्रो० संस्कृत विभाग'
ए० पी० एन० पी० जी० कालेज
बस्ती, उत्तर प्रदेश।

सनातनधर्म ट्रस्ट, गोरखपुर

प्रकाशक—

सनातनधर्म ट्रस्ट, गोरखपुर।

ए-३६, आवास विकास कालोनी, शाहपुर, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश।

Pin : 273006, **Contact No. :** 8004332000

प्रकाशन वर्ष : संवत् २०७४, शक १९३९, सन् २०१७

सहयोग राशि : ₹ ५०/- (रु० पचास मात्र)



टाईप एवं कम्प्यूटर मैनेजमेंट—**अरुण कुमार श्रीवास्तव**

मुद्रक : अरुण ऑफसेट प्रिन्टर्स, दुर्गाबाड़ी, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश। पिन : २७३००१

कायस्थ कौन हैं ?

पुराणानुसार सृष्टि के प्रारम्भ में, सृष्टि के नियन्त्रण हेतु, भगवान् ब्रह्मा के हजार वर्ष तपस्या के फलस्वरूप, भगवान् ब्रह्मा की काया (सर्वांग शरीर) से '**भगवान् कायस्थ**' उत्पन्न हुये, जिन्हें '**चित्रगुप्त**' भी कहा जाता है। अपने समान शक्ति के पुत्र को भगवान् ब्रह्मा ने सभी प्राणियों के '**भाग्य**' को लिखने के लिये **धर्माधिकार** देकर **यमलोक** में अपने कार्य के लिये स्थापित किया।

भगवान् चित्रगुप्त का विवाह–**कश्यप ऋषि के पौत्र–वैवस्वतमनु की ४ पुत्रियों** तथा **नागों (नागर ब्राह्मणों) की ८ ऋषिपुत्रियों के साथ हुआ था।** इन ऋषिपुत्रियों से द्वादश देवपुत्र उत्पन्न हुये, यही चित्रगुप्तवंशीय द्वादश कायस्थ हैं। स्वर्ग से उन द्वादश ऋषिपुत्रियों के द्वादश देवपुत्रों को **भगवान् ब्रह्मा** एवं **माता सावित्री** स्वयं लेकर मृत्युलोक आये और उन्हें ब्राह्मण शिक्षा से संस्कारित करने के लिये—**मांडव्य, गौतम, श्रीहर्ष, हारित, वाल्मीकि, वसिष्ठ, सौभरि, दालभ्य, हंस, भट्ट, सौरभ** तथा **माथुर** ऋषियों को दिया।

इन महान ऋषियों से शिक्षित होकर चित्रगुप्तवंशीय द्वादश कायस्थ—**निगम, श्रीगौड, श्रीवास्तव, श्रेणीपति/कुलश्रेष्ठ, वाल्मीकि, वसिष्ठ/अस्थाना, सौरभ/अम्बष्ट, दालभ्य/कर्ण, सुखसेन/सक्सेना, भट्टनागर, सूर्यध्वज** तथा **माथुर** नाम के **द्वादश गौडब्राह्मण** हुये।

☛ भगवान् ब्रह्मा के द्वादश पौत्रों को शिक्षित करने वाले द्वादश ऋषियों के पुत्र भी, ब्रह्मकायस्थ ब्राह्मणों के साथ शिक्षित

होकर—**मालवीय, श्रीगौड, गंगापुत्र, हर्याणा, वाल्मीकि, वसिष्ठ, सौरभ, दालभ्य, सुखसेन, भट्टनागर, सूर्यध्वज** तथा **माथुर** नाम के **गौडब्राह्मण** हुये।

चित्रगुप्तवंशीय कायस्थों का उद्भव—**पद्मपुराण** के **उत्तरखण्ड** में '**कायस्थानांसमुत्पत्ति**' नामक अध्याय में दिया गया है। चित्रगुप्त वंशीय कायस्थ पूर्व में '**द्वादश गौडब्राह्मण**' के नाम से जाने जाते थे।

ब्राह्मणउत्पत्तिमार्तण्ड में पृष्ठ ५ पर लिखा है—

गौडाश्च द्वादश प्रोक्ताः कायस्थास्तावदेवहि।

अर्थात् **द्वादश गौडब्राह्मण** ·¤æ ही कालान्तर में कायस्थ Áæ Ù।

× × ×

वाराणसी के 2 विश्वविद्यालय के संस्थापक,

2 गौडब्राह्मण

१–'सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय' को उस समय के तत्कालिक मुख्यमंत्री '**डा० सम्पूर्णानन्द**' ने स्थापित किया था। डा० सम्पूर्णानन्द संस्कृत के उच्चस्तर के विद्वान थे तथा ये श्रीवास्तव कायस्थ कुल में उत्पन्न **श्रीहर्ष–गौडब्राह्मण** थे।

२–'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (BHU)' को '**मदन मोहन मालवीय**' ने स्थापित किया था, ये मांडव्य ऋषि के कुल में उत्पन्न **मांडव्य–गौडब्राह्मण** थे।

× × ×

कायस्थों की उत्पत्ति पौराणिक है, इसे जानने के लिये **पद्मपुराण के उत्तरखण्ड** में दिये गये कुछ अंशों पर ध्यान दें।

क्रमशः.........

ॐ तत्सद्ब्रह्मणे नमः ।

महामुनिश्रीमद्व्यासप्रणीतं

पद्मपुराणम् ।



(तत्र षष्ठान्तिमोत्तरखण्डरूपश्चतुर्थो भागः)

एतत्पुस्तकं कै० श्री० रावसाहेब मण्डलीकेत्युपनामधारिभिः
विश्वनाथ नारायण इत्येतैः
महता परिश्रमेण बहुतराणि पुस्तकानि मेलयित्वा
सपाठान्तरनिर्देशं संशोधितम् ।

तच्च

महादेव चिमणाजी आपटे

इत्यनेन

पुण्याख्यपत्तने

आनन्दाश्रममुद्रणालये

आयसाक्षरैर्मुद्रयित्वा

प्रकाशितम् ।

शालिवाहनशकाब्दाः १८१६
ख्रिस्ताब्दाः १८९४

मूल्यं समग्रग्रन्थस्य चतुर्विंशतिरूपकाः ।

क्रमशः.........

पद्मपुराण–उत्तरखण्ड के ÂÍ× अध्याय में,
कायस्थउत्पत्ति का वर्णन, श्लोक संख्या ४८ में विद्यमान है



तन्माहात्म्यं प्रवक्ष्यामि यथोक्तं चैव नारद । विष्णुनिन्दारता ये च वेसुलोभेन सत्तम ॥ ४६
तेषां पापं तु वक्ष्यामि सांप्रतमृषिसत्तम । ज्वालामुख्यास्तथाऽऽख्यानं हिमशैलेक्षणं तथा ॥ ४७
ब्रह्मोत्पत्तिस्तु वै यत्र तं प्रदेशं वदाम्यहम् । कायस्थानां समुत्पत्तिं गयाव्याख्यानमेव च ॥ ४८
गदाधरस्वरूपं च फल्गुवर्णनमेव च । एतेषां चैव माहात्म्यं पाद्मे दृष्टं तथा श्रुतम् ॥ ४९
प्रबोधस्वरूपं च सकल्केर्येश एव च । रामगयाया माहात्म्यं तथा प्रेतशिलाभवम् ॥ ५०
ब्रह्मणश्च तथाऽऽख्यानं शिलाख्यानं वदाम्यहम् । ब्रह्मयोनेस्तथाख्यानमक्षयाख्यवटस्य च ॥ ५१
श्राद्धे तत्र महत्पुण्यं तत्सर्वं च वदाम्यहम् । महेश्वरे कृतां भक्तिं विष्णुना च महात्मना ॥ ५२
अद्यापि काश्यां जयति महारुद्रो ह्यनामयः । माहात्म्यं च ततो वक्ष्ये सागरस्य हि नारद ॥ ५३
तिलतर्पणजं पुण्यं यवजं पुण्यमेव च । तुलसीदलसंयुक्तं तर्पणं देवजं तथा ॥ ५४
तन्माहात्म्यं प्रवक्ष्यामि यथोक्तं ब्रह्मणा मम । शङ्खनादस्य माहात्म्यं पुण्यं चासंख्यसंज्ञकम् ५५
रवेर्वारस्य माहात्म्यं योगस्य विष्णुसंज्ञकः । वैधृतेर्महिमाचैव व्यतीपातस्य वै तथा ॥ ५६
एतत्सर्वं प्रवक्ष्यामि यथोक्तं चैव नारद । अन्नदानं वस्त्रदानं भूमिदानं तथैव च ॥ ५७
शय्यादानं च गोदानं तथा वृषभमेव च(?) । जन्माष्टम्याश्च माहात्म्यं मत्स्यमाहात्म्यमेव च ५८
कूर्ममाहात्म्यमत्रोक्तं वाराहस्य तथैव च । माहात्म्यं च गवादीनां दानानां प्रवदाम्यहम् ॥ ५९
*महदाख्याने च मादीनि दानानि सर्वं वदाम्यहम् । प्रह्लादमुख्यभक्ता ये ये केचिद्भुवि विश्रुताः
तन्माहात्म्यं ततो वक्ष्ये शृणु देवर्षिसत्तम । जागरे चैव यत्पुण्यं दीपदानकृते च यत् ॥ ६१
प्रहरेषु पृथक्पूजाफलं देवर्षिसत्तम । परशुरामस्याऽऽख्यानं रेणुकाया वधस्तथा ॥ ६२
ब्राह्मणानां भूमिदानं रामेणैव च यत्कृतम् । रामस्याऽऽश्रमजं पुण्यं वदाम्यहमशेषतः ॥ ६३
नर्मदायास्तथाऽऽख्यानं पुण्यं पूजाऽनयोस्तथा । दानं वेदपुराणानामाश्रमाणां निरूपणम् ॥ ६४
हिरण्यदानं पुण्यं च ब्रह्माण्डदानमेव च । पद्मपुराणदानं च खण्डानां व्यक्तयस्तथा ॥ ६५
प्रथमं सृष्टिखण्डं +च द्वितीयं भूमिखण्डकम् । पातालं च तृतीयं स्याच्चतुर्थं पुष्करं तथा ॥ ६६
उत्तरं पञ्चमं प्रोक्तं खण्डान्यनुक्रमेण वै । एतत्पद्मपुराणं तु व्यासेन च महात्मना ॥ ६७
कृतं लोकहितार्थाय ब्राह्मणश्रेयसे तथा । शूद्राणां पुण्यजननं तीव्रदारिद्र्यनाशनम् ॥ ६८
मोक्षदं सुहृदं(दां) चांऽऽशु कल्याणप्रदमव्ययम् । श्रुत्वा दानं तथा कुर्याद्विधिना तत्र नारद ६९

इति श्रीमहापुराणे पाद्म उत्तरखण्डे महेश्वरनारदसंवादे बीजसमुच्चयो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

आदितः श्लोकानां समष्ट्यङ्काः—३१७४२

अथ द्वितीयोऽध्यायः ।

महेश उवाच—
एकलक्षं पञ्चविंशत्सहस्राः पर्वतास्तथा । तेषां मध्ये महत्पुण्यं बदरिकाश्रममुत्तमम् ॥ १

कायस्थब्राह्मणों की उत्पत्ति पौराणिक सत्य है। पद्मपुराणान्तर्गत **'कायस्थानांसमुत्पत्ति'** इस प्रकार है—

पद्मपुराण–उत्तरखण्डोक्त

कायस्थानांसमुत्पत्ति

(द्वादशगौडब्राह्मणोत्पत्ति)

सूत उवाच

एकदा ब्रह्मलोके तु यमः प्रोवाच कं प्रति।
चतुरशीतिलक्षाणां शासनेऽहं नियोजितः॥ १ ॥
असहायः कथं स्थातुं शक्नोमि पुरुषर्षभ।

सूत बोले—एक बार यमराज ब्रह्मलोक में जाकर ब्रह्माजी से बोले! आपने मुझे चौरासी लाख योनियों पर शासन करने के लिए नियुक्त किया है। **हे पुरुषश्रेष्ठ! मैं असहाय हूँ,** इस कार्य को कैसे करूँ॥ १–१½ ॥

ब्रह्मोवाच

प्राप्स्यते पुरुषः शीघ्रमित्युक्त्वा विससर्ज तम्॥ २ ॥
धर्मराजे गते ब्रह्मा समाधिस्थो बभूव ह।
तत् शरीरात् महाबाहुः श्यामः कमललोचनः॥ ३ ॥
लेखनीपट्टिकाहस्तो मषीभाजनसंयुतः।
स निर्गतोऽग्रतस्तस्थौ नाम देहीति चाब्रवीत्॥ ४ ॥

भगवान् ब्रह्मा बोले—हे यमराज तुमको अतिशीघ्र कोई पुरुष मिल जायेगा ये कह कर ब्रह्माजी ने यमराज को वहाँ से विदा कर दिया। **यमराज के चले जाने के बाद भगवान् ब्रह्मा तपस्या में लीन हो गये। उनके शरीर से एक पुरुष निकले, जो महाशक्तिशाली, श्यामवर्ण वाले, कमल के समान आँखों**

वाले, हाथ में कलम, पट्टिका और दावात लिए हुए थे। उन्होंने भगवान् ब्रह्मा से कहा, मुझे नाम दीजिये?॥ २-४॥

ब्रह्मोवाच

गच्छ पुरुष भद्रं ते तप आचरतामिति।
इत्याज्ञप्तः स पुरुषो ययौ धौरेयदेशकान्॥ ५ ॥
उज्जयिन्याः समीपे तु क्षिप्रायाश्च तटे शुभे।
पंचक्रोशात्मके क्षेत्रे तपस्तप्तुं महत्तरम्॥ ६ ॥
ततः कतिपये काले ब्रह्मा लोकपितामहः।
उज्जयिन्यां ततः श्रीमानाजगाम मुदान्वितः॥ ७ ॥
यजनार्थाय यज्ञैश्च नानासंभारसंयुतः।
चित्रगुप्तोऽपि धर्मात्मा कन्याः प्राप सुलक्षणाः॥ ८ ॥
वैवस्वतमनोः कन्याश्चतस्त्रः शुभलक्षणाः।
अष्टौ सुरूपा नागीया पितृभक्तिपरायणाः॥ ९ ॥
तासां समभवन्पुत्रा द्वादशैव जगत्प्रियाः।
ब्रह्मा वर्षसहस्त्रं तु यज्ञैरिष्ट्वा सुदक्षिणैः॥ १० ॥
चित्रगुप्तमुवाचेदं वाक्यं धर्मार्थमेव च।

भगवान् ब्रह्मा बोले—हे भद्र पुरुष तुम तप का आचरण करो, ऐसी आज्ञा प्राप्त करके वह पुरुष (चित्रगुप्त) धौरेय देश को चल दिये। **उज्जयनी नगरी के समीप क्षिप्रा नदी के सुन्दर तट पर पाँच कोश के पुण्य क्षेत्र में घोर तप करने लगे।** उस पुरुष के तपस्या करने के कुछ दिन बाद प्रसन्न मुद्रा में पितामह ब्रह्मा उज्जयनी नगरी में पहुँचे। उन्होंने अनेक सामग्रियों से युक्त एक

महान यज्ञ प्रारम्भ कर दिया। तत्पश्चात् धर्मात्मा चित्रगुप्त को विवाह हेतु सुन्दर लक्षणों वाली कन्यायें प्राप्त हुई। **सुन्दर लक्षणों वाली चार कन्यायें वैवस्वतमनु (कश्यप ऋषि के पौत्र) से और पिता की सेवा में तत्पर आठ कन्यायें नागों (नागर ब्राह्मणों) से प्राप्त हुईं।** इस प्रकार बारह स्त्रियों से संसार को प्रिय लगने वाले तदनुरूप **बारह पुत्र उत्पन्न हुए** और ब्रह्मा **हजार वर्ष तक** दक्षिणा देने वाले इस यज्ञ को पूर्ण किये। भगवान् ब्रह्मा–चित्रगुप्त से, अत्यन्त प्रिय, धर्म एवं अर्थ–युक्त वाणी से बोले– ॥ ५—१०१/२ ॥

ब्रह्मोवाच

चित्रगुप्त महाबाहो मत्प्रियोऽस्मत्समुद्भवः ॥ ११ ॥
चित्रगुप्त सुगुप्तांग तस्मात् नाम्ना सुविश्रुतः।
मम कायात् समुद्भूतः सर्वांगंप्राप्य सत्वरम् ॥ १२ ॥
तस्मात् कायस्थविख्याता लोके त्वं तु भविष्यसि।
एते वै तव पुत्राश्च काक पक्षधराः शुभाः ॥ १३ ॥
सर्वे षोडशवर्षीयाः शुभाचाराः शुभाननाः।
धर्मराजगृहं गच्छ कार्यं मे कुरु सुव्रत ॥ १४ ॥
सत्–असत् सर्वजन्तूनां लेखकः सर्वदैव हि।

भगवान् ब्रह्मा बोले—हे महाशक्तिशाली चित्रगुप्त! तुम्हारा उद्भव मुझसे है, इसलिए 'तुम मुझे अत्यन्त प्रिय हो।' तुम्हारे अंग गुप्त हैं, इसलिए **चित्रगुप्त** के नाम से विख्यात होगे। मेरी काया से तुम्हारा उद्भव है, इसलिए शीघ्र सभी अंगों को प्राप्त करोगे, तब लोकों में '**कायस्थ**' नाम से विख्यात होगे, और तुम्हारे सोलह वर्ष

के सभी पुत्र, काक-पक्ष धारण करने वाले, सदाचारी, शुभ मुख वाले एवं उत्तम आचरण करने वाले होंगे। **हे सुव्रत यमलोक में जाकर मेरा कार्य करो और कीटाणु से लेकर इन्द्र आदि देव तक सभी प्राणियों के 'भाग्य' को लिखो**॥ ११—१४१/२ ॥

एतान् दास्यामि सर्वान्वै ऋषिभक्तिपरांस्तव॥ १५ ॥
एवमुक्त्वा तु विप्रेभ्यो ददौ लोकपितामहः।

भगवान् ब्रह्मा ऋषियों से बोले-चित्रगुप्त के ऋषि-भक्ति परायण सभी पुत्रों को, मैं तुम्हें देता हूँ। ऐसा कहकर उन ऋषियों को लोक पितामह भगवान् ब्रह्मा ने चित्रगुप्त के पुत्रों को दे दिया॥ १५—१५१/२ ॥

निगम-कायस्थ, गौडब्राह्मण की उत्पत्ति

मांडव्याय ददौ पुत्रं सुरूपमृषिवल्लभम्॥ १६ ॥
मंडपाचलसान्निध्ये मंडपेश्वरसन्निधौ।
मंडपेश्वरीयादेवी वर्तते जगदंबिका॥ १७ ॥
गृहीत्वा गतवान् सोऽपि ऋषिर्मांडव्यसंज्ञकः।
नाम्नाश्रीनैगमः सोऽपि कायस्थो देवनिर्मितः॥ १८ ॥
मांडव्यास्तत्र श्रीगौडागुरवः शंसितव्रताः।
नैगमास्तेऽपि बहवः ऋषिभक्तिपरायणाः॥ १९ ॥
जाता वै नैगमास्तत्रशतशोऽथ सहस्त्रशः।
गौडास्तेऽपि च मांडव्य शिष्यास्ते गुरवःस्मृताः॥ २० ॥
शिष्याणां चैव लक्षैकं प्रसंगात्समुदीरितम्।
तस्मादर्धं गतास्ते वै लंभितं वासयन्पुरम्॥ २१ ॥

भगवान् ब्रह्मा ने **प्रथम पुत्र** जो सुरूप एवं ऋषियों के प्रिय थे उन्हें ऋषियों में श्रेष्ठ माण्डव्य ऋषि को दिया, जो मंडप पर्वत के निकट रहते थे। जहाँ पर **मंडपेश्वरदेव** और जगत की माता **मण्डपेश्वरीदेवी** विद्यमान हैं। उनके पास चित्रगुप्त के पुत्र को लेकर माण्डव्य ऋषि चले गये। कायस्थदेव (चित्रगुप्त देव) द्वारा निर्मित श्रीनैगम गौड नाम से प्रसिद्ध हुए, और श्रीगौड (माण्डव्य) गोत्रीय कायस्थ, गुरु के रूप में प्रसिद्ध हुए। नैगम गौड जो ऋषि भक्ति परायण हैं उनसे सौ हजार नैगमों की उत्पत्ति हुई, गौड व माण्डव्यगोत्रीयशिष्य, **गुरु** के रूप में प्रसिद्ध हुये। इन शिष्यों की संख्या एक लाख थी जो प्रसंगानुसार कहा जायेगा। इनमें से ५० (पचास) हजार लम्भित नगर बनाकर निवास करने लगे॥ १६—२१ ॥

☛ भगवान् ब्रह्मा की आज्ञा से माण्डव्य ऋषि ने भगवान् चित्रगुप्त के पुत्र को शिक्षित किया जो शिक्षित होकर **'निगम' गौडब्राह्मण** हुए। **इनका वास मालवा क्षेत्र में है।** 'निगम' वेद को कहते हैं। पूर्व काल में निगम गौड वेदों के महापण्डित थे, इसीलिए यह वेदों के नाम से ही निगम कहे जाते हैं। ये गुरु होकर मांडव्यगोत्र का विस्तार किये।

☛ भगवान् चित्रगुप्त के पुत्रों के साथ मांडव्य ऋषि के पुत्र भी शिक्षित हुये थे, जो **मालवीय गौडब्राह्मण** हुये। **इनका वास भी मालवा क्षेत्र में है।**

× × ×

गौड-कायस्थ, गौडब्राह्मण की उत्पत्ति

द्वितीयं तु सुतं तस्य गौतमाय ददौ ततः।
गौडेश्वरी तु या देवी वर्तते जगदंबिका॥ २२॥
श्रीगौडः सोऽपि कायस्थो बहुधा विश्रुतः शुचिः।
गौतमो दत्तावांस्तेषां गुर्वर्थं तानृषीन् विभुः॥ २३॥

श्रीगौडास्तत्र शिष्यावै गुरुवस्ते तपस्विनः।

भगवान् ब्रह्मा ने **द्वितीय पुत्र** गौतम ऋषि को दिया। उनकी देवी **गौडेश्वरी जगदम्बिका** हैं। श्रीगौड नाम के कायस्थ पवित्र मन वाले संसार में विख्यात हुए। ब्रह्मा ने ऋषियों में श्रेष्ठ गौतम को शिक्षा के लिये दिया। श्रीगौड (गौतमगोत्रीयकायस्थ), **तपोनिष्ठ गुरु** के रूप में प्रसिद्ध हुये॥ २२—२३१/२ ॥

☛ भगवान् ब्रह्मा की आज्ञा से गौतम ऋषि ने भगवान् चित्रगुप्त के पुत्र को शिक्षित किया किया जो शिक्षित होकर **श्रीगौड ब्राह्मण** हुए। ये गुरु होकर गौतम गोत्र का विस्तार किये।

☛ भगवान् चित्रगुप्त के पुत्रों के साथ गौतम ऋषि के पुत्र भी शिक्षित हुये थे, जो **श्रीगौड, गौडब्राह्मण** हुये।

दोनों के उपनाम **श्रीगौड,** ही हैं।

× × ×

श्रीवास्तव-कायस्थ, गौडब्राह्मण की उत्पत्ति

तृतीयं तु सुतं तस्य श्रीहर्षं दत्तवांस्ततः॥ २४॥
श्रीहर्षेश्वरसान्निध्ये गतवानृषिसत्तमः।
सरोरुहे शुभे देशे शुभे च सरयूतटे॥ २५॥
सरोरुहेश्वरी यत्र वर्तते जगदंबिका।
श्रीगौडास्तस्य वै शिष्या गुर्वर्थं संप्रकल्पिताः॥ २६॥
श्रीवास्तव्याश्च कायस्था नानारूपा ह्यनेकशः।
श्रीगौडानां च लक्षैकं शिष्याणां संप्रकीर्तितम्॥ २७॥
तस्मादर्धं गतास्तेऽपि ह्यवसन् जाह्नवीतटे।

भगवान् ब्रह्मा ने **तृतीय पुत्र** श्रीहर्ष ऋषि को दिया। चित्रगुप्त के पुत्र को लेकर श्रीहर्ष ऋषि सरोरुह नाम के सुन्दर स्थान एवं

सरयू नदी के पावन तट पर चले गये जहाँ पर **श्रीहर्षेश्वरदेव** एवं **सरोरुहेश्वरीदेवी** रहती हैं। श्रीगौड (श्रीहर्षगोत्रीयशिष्य), **गुरु** के रूप में प्रसिद्ध हुए। श्रीवास्तव कायस्थ ही गौडब्राह्मण के नानारूप में हुए। श्रीगौड के एक लाख शिष्य बताये गये जिनमें से ५० हजार गंगा के तट पर जाकर निवास करने लगे॥ २४—२७१/२ ॥

☛ भगवान् ब्रह्मा की आज्ञा से श्रीहर्ष ऋषि ने भगवान् चित्रगुप्त के पुत्र को शिक्षित किया जो शिक्षित होकर **श्रीवास्तव गौडब्राह्मण** हुए। ये गुरु होकर श्रीहर्ष गोत्र का विस्तार किये। भगवान् चित्रगुप्त के यह पुत्र **श्रीविद्या** अर्थात **देवी त्रिपुरसुन्दरी/षोडषी** के उपासक थे, इसलिये यह '**श्रीवास्तव**' कहलाये।

☛ भगवान् चित्रगुप्त के पुत्रों के साथ श्रीहर्ष ऋषि के पुत्र भी शिक्षित हुये थे, जो **गंगापुत्र, गौडब्राह्मण** हुये।

× × ×

श्रेणीपति-कायस्थ, गौडब्राह्मण की उत्पत्ति

चतुर्थं तु सुतं तस्य हारीताय ददौ ततः॥ २८॥
गृहीत्वा गतवान् सोऽपि देशे हर्याणके शुभे।
हारीतेश्वरसान्निध्ये हारितस्याश्रमे शुभे॥ २९॥
हर्याणेशी यत्र देवी वर्तते जगदंबिका।
कायस्थाः श्रेणिपतयः विवृताश्च सहस्रशः॥ ३०॥
हर्याणाश्चैव श्रीगौडा गुरुत्व संप्रणोदिताः।

भगवान् ब्रह्मा ने **चतुर्थ पुत्र** हारीत ऋषि को दिया। हारीत ऋषि उस पुत्र को लेकर हरियाणा नाम के सुन्दर देश में चले गये जहाँ पर **हारीतेश्वरदेव** एवं **हर्याणेशीदेवी** हैं और वहीं हारीत ऋषि का आश्रम है। चित्रगुप्त के वंश में उत्पन्न होने वाले कायस्थ श्रेणीपति गौड ब्राह्मण हजारों की संख्या में हैं। श्रीगौड (हारितगोत्रीयकायस्थ),

तपोनिष्ठ गुरु के रूप में निर्देश देने वाले हुये॥ २८—३०½ ॥

☛ भगवान् ब्रह्मा की आज्ञा से हारित ऋषि ने भगवान् चित्रगुप्त के पुत्र को शिक्षित किया जो शिक्षित होकर **श्रेणीपति (हर्याणा) गौडब्राह्मण** हुए। श्रेणीपति गौड ही **कुलश्रेष्ठ** कहलाये। ये गुरु होकर हारित गोत्र का विस्तार किये।

☛ भगवान् चित्रगुप्त के यह पुत्र माताकाली के सशक्त साधक थे, 'कुलश्रेष्ठ' माताकाली का ही एक नाम है। इसलिये इन्हें माताकाली के नाम से ही 'कुलश्रेष्ठ' कहा जाता है। यथा—

ॐ कुलश्रेष्ठायै नमः। (ककारादिकालीसहस्त्रनाम/सहस्त्रनामावली)

☛ भगवान् चित्रगुप्त के पुत्रों के साथ हारित ऋषि के पुत्र भी शिक्षित हुये थे, जो **हर्याणा, गौडब्राह्मण** हुये।

× × ×

वाल्मीकि-कायस्थ, गौडब्राह्मण की उत्पत्ति

पंचम तु सुतं तस्य वाल्मीकाय ददौ ततः॥ ३१ ॥
गृहीत्वा गतवान् सोऽह्यर्बुदारण्यके शुभे।
देशेऽर्बुदे महारण्ये वल्मीकाश्रम संज्ञके॥ ३२ ॥
वाल्मीकेश्वरसान्निध्ये कायस्थो देवनिर्मितः।
वाल्मीकेश्वरिका यत्र वर्तते जगदंबिका॥ ३३ ॥
वाल्मीकाश्चैव कायस्था वर्द्धितास्तदनंतरम्।
वाल्मीकाश्चैव गुरवो मुनिना संप्रकल्पिताः॥ ३४ ॥
रक्तशृङ्गाश्च इत्येते पार्श्वे पश्चिमतः शुभे।
योजनद्वयमाने तु दूरे तिष्ठंति चाश्रमे॥ ३५ ॥
कियत्काले च संप्राप्ते यज्ञकर्म समाचरन्।

भगवान् ब्रह्मा ने **पञ्चम पुत्र** वाल्मीकि ऋषि को दिया। वाल्मीकि कायस्थ देव (चित्रगुप्त देव) द्वारा निर्मित उस बालक

को लेकर अर्बुद नामक जंगल में, जहाँ उनका सुन्दर आश्रम है, वहाँ चले गये। कायस्थदेव के द्वारा निर्मित स्थान पर **वाल्मीकेश्वरदेव** एवं **वाल्मीकेश्वरीदेवी** विराजमान हैं। वहीं से कायस्थ वंशीय वाल्मीकि गौड ब्राह्मण की वृद्धि हुई। वाल्मीकि ऋषि के गोत्र में जो उत्पन्न हुए **उनको मुनियों ने गुरु की संज्ञा दी।** उसके समीप पश्चिम भाग में दो योजन (आठ कोस) लम्बा रक्तशृङ्ग नाम का आश्रम है। **समयानुसार जहाँ यज्ञ का कार्य हुआ है**॥ ३१—३५ $^{१}/_{२}$ ॥

☛ भगवान् ब्रह्मा की आज्ञा से वाल्मीकि ऋषि ने भगवान् चित्रगुप्त के पुत्र को शिक्षित किया जो शिक्षित होकर **वाल्मीकि गौडब्राह्मण** हुए। ये गुरु होकर वाल्मीकि गोत्र का विस्तार किये।

☛ वाल्मीकि ऋषि ने भगवान् चित्रगुप्त के पुत्रों से यज्ञ करवाया था।

☛ भगवान् चित्रगुप्त के पुत्रों के साथ वाल्मीकि के पुत्र भी शिक्षित हुये थे, जो **वाल्मीकि, गौडब्राह्मण** हुये। दोनों के उपनाम **वाल्मीकि** ही हैं।

× × ×

वसिष्ठ-कायस्थ, गौडब्राह्मण की उत्पत्ति

षष्ठं तस्य सुतं ब्रह्मा वसिष्ठाय ददौ पुनः॥ ३६॥
गृहीत्वा गतवान् सोऽपि वसिष्ठो मुनिसत्तमः।
अयोध्यामंडले देशे वसिष्ठेश्वरसन्निधौ॥ ३७॥
सरयूतटमासाद्य वर्तते जगदंबिका।
वासिष्ठाश्चैव कायस्था गुरवोऽपि शुचिस्मिृताः॥ ३८॥
वासिष्ठा ऋषिशिष्याश्च वसिष्ठस्य महात्मनः।

भगवान् ब्रह्मा ने **षष्ठम पुत्र** वसिष्ठ मुनि को दिया। वसिष्ठ ऋषि **वसिष्ठेश्वरदेव** और **वसिष्ठादेवी** के पास सरयू नदी के तटपर अयोध्या नामक देश में ले गये। वसिष्ठगोत्रीयकायस्थ, **गुरु** के रूप

में प्रसिद्ध हुये। महात्मा वसिष्ठ ऋषि के शिष्य वसिष्ठ गौड के नाम से प्रसिद्ध हुए॥ ३६—३८१/२ ॥

☛ भगवान् ब्रह्मा की आज्ञा से वसिष्ठ ऋषि ने भगवान् चित्रगुप्त के पुत्र को शिक्षित किया जो शिक्षित होकर **वसिष्ठ गौडब्राह्मण** हुए। वसिष्ठ गौड ही **अस्थाना** कहलाये। ये गुरु होकर वसिष्ठ गोत्र का विस्तार किये। अस्थाना कायस्थ गौड ब्राह्मण, काली के अनन्य भक्त थे। इसलिये यह काली के ही नाम **अस्थाना** से पहचाने जाते हैं। ॐ कुल स्थानायै नमः। माता काली का ही एक नाम '**अस्थाना**' है।

☛ भगवान् चित्रगुप्त के पुत्रों के साथ वसिष्ठ ऋषि के पुत्र भी शिक्षित हुये थे, जो **वसिष्ठ, गौडब्राह्मण** हुये।

× × ×

सौरभ-कायस्थ, गौडब्राह्मण की उत्पत्ति

सप्तमं तु सुतं तस्य ददौ सौभरये ततः॥ ३९ ॥
गृहीत्वा गतवान सोऽपि ब्रह्मर्षिः स्वाश्रम शुभम्।
सौरभेय शुभे देशे सौरभेश्वरसन्निधौ॥ ४० ॥
सौरभी देवता तत्र वर्तते जगदंबिका।
सौरभाश्चैव कायस्थाः सौरभा गुरवः स्मृताः॥ ४१ ॥

भगवान् ब्रह्मा ने **सप्तम पुत्र** सौभर ऋषि को दिया। सौभर ऋषि उस पुत्र को लेकर अपने सुन्दर आश्रम सौरभ देश में गये जहाँ पर **सौरभेश्वरदेव** एवं **सौरभीदेवी** विद्यमान हैं। सौभरगोत्रीयकायस्थ सौरभ गौड, **गुरु** के रूप में प्रसिद्ध हुये॥ ३९—४११/२ ॥

☛ भगवान् ब्रह्मा की आज्ञा से सौभरि ऋषि ने भगवान् चित्रगुप्त के पुत्र को शिक्षित किया जो शिक्षित होकर सौरभ **गौडब्राह्मण** हुए। सौरभ गौड ही **अम्बष्ट** कहलाये। ये गुरु होकर सौरभ गोत्र का विस्तार किये।

☛ भगवान् चित्रगुप्त के यह पुत्र 'माता अम्बादेवी' के अनन्य

भक्त थे। यह 'माता अम्बादेवी' को अपना इष्ट मानते थे। इसलिये यह माता अम्बा के नाम से ही 'अम्बष्ट' कहे जाते हैं। आज भी इन अम्बष्टों के यहाँ अम्बादेवी की पूजा अर्चना सहज देखी जा सकती है।

☛ भगवान् चित्रगुप्त के पुत्रों के साथ सौभरि ऋषि के पुत्र भी शिक्षित हुये थे, जो **सौरभ, गौडब्राह्मण** हुये।

× × ×

दालभ्य-कायस्थ, गौडब्राह्मण की उत्पत्ति

अष्टमं तु सुतं तस्य दालभ्याय ददौ ततः।
गृहीत्वा गतवान् सोऽपि स्वाश्रमं मुनिसंयुतम्॥ ४२॥
देशो दुर्ललको यत्र दालभ्या च सरिद्वरा।
दालभ्येश्वरसान्निध्ये दालभ्यश्चित्रगुप्तजः॥ ४३॥
दालभ्या इति या देवी वर्तते जगदंबिका।
तच्छिष्याश्चैव दालभ्या गुरुत्वे ते प्रकीर्तिताः॥ ४४॥
तदुत्पन्ना द्विजाः सूत शतशोऽथ सहस्रशः।
एकदाहिस्थलीं प्राप्ताः केचित्कुंडलिनीं गताः॥ ४५॥
याजयंति स्म दालभ्यान् कायस्थांश्चित्रगुप्तजान्।

भगवान् ब्रह्मा ने **अष्टम पुत्र** दालभ्य ऋषि को दिया। दालभ्यऋषि उस बालक को दुर्ललक देश में नदियों में श्रेष्ठ दालभ्य नदी के तटपर बने अपने आश्रम में ले गये। जहाँ **दालेभ्येश्वरदेव** और **दालभ्यादेवी** विराजमान हैं। दालभ्य गोत्रीय कायस्थ, **गुरू** के रूप में प्रसिद्ध हुये। दालभ्य ऋषि के गौड ब्राह्मण सैकडों एवं हजारों की संख्या में हुए। इनके वंशजों में कुछ लोग अहिस्थली, कुछ लोग कुंडलिनीपुर में गये। **दालभ्य ऋषि ने चित्रगुप्त वंशीय कायस्थों से यज्ञ करवाये**॥ ४२—४५ $^{1}/_{2}$॥

☛ भगवान् ब्रह्मा की आज्ञा से दालभ्य ऋषि ने भगवान् चित्रगुप्त के पुत्र को शिक्षित किया जो शिक्षित होकर दालभ्य **गौडब्राह्मण** हुए। दालभ्य गौड ही **कर्ण** कहलाये। ये गुरु होकर दालभ्य गोत्र का विस्तार किये।

☛ दालभ्य ऋषि ने भगवान् चित्रगुप्त के पुत्रों से यज्ञ करवाया था। कर्ण ब्रह्मकायस्थ मूल रूप से विन्ध्यपर्वत के दक्षिण 'कर्णाटक' के आस-पास के निवासी हैं। इसलिये यह कर्ण ब्रह्मकायस्थ विन्ध्यपर्वत के दक्षिण आसाम, बंगाल, पूर्वीबिहार, उड़ीसा, आन्ध्रप्रदेश, कर्णाटक, तमिलनाडु तथा केरल तक बहुतायत पाये जाते हैं। इन्हें दक्षिण भारत में **कर्णम्** तथा कहीं इन्हें **नियोगी ब्राह्मण** भी कहा जाता है। मूलतः यह दालभ्य गौडब्राह्मण हैं।

☛ भगवान् चित्रगुप्त के पुत्रों के साथ दालभ्य ऋषि के पुत्र भी शिक्षित हुये थे, जो **दालभ्य, गौडब्राह्मण** हुये।

× × ×

सुखसेन-कायस्थ, गौडब्राह्मण की उत्पत्ति

नवमं तु सुतं तस्य हंस तमृषिसत्तमम्॥ ४६॥
गृहीत्वा प्रययौ हंसं हंसदुर्गस्य सन्निधौ।
सुखसेनो महादेशो विद्यते गुणवत्तरः॥ ४७॥
हंसेश्वरस्यसान्निध्य ऋषीणां प्रवरः सुधीः।
हंसेश्वरी यत्र देवी वर्तते जगदंबिका॥ ४८॥
तदुत्पन्नाश्च कायस्थाः सुखसेना ह्यनेकशः।
ततस्तेभ्यो ददौ हंसान् शिष्यांश्च याजनानि वा॥ ४९॥
विप्रास्तु सुखदाश्चैव सुखसेना महौजसः।
याजयंति सदाचाराः सुदेशेषु व्यवस्थिताः॥ ५०॥

भगवान् ब्रह्मा ने **नवम पुत्र** ऋषियों में उत्तम हंस ऋषि को दिया। जो उनको लेकर हंस नामक दुर्ग के समीप अपने आश्रम में गये। यह आश्रम

सुखसेन देश में है। जहाँ पर विद्वान एवं ऋषिश्रेष्ठ हैं, वहाँ **हंसेश्वरदेव** तथा **हंसेश्वरीदेवी** रहती है। हंस गोत्रीय कायस्थ सुखसेन गौडब्राह्मण हुए। **हंस ऋषि ने उनको (शिष्योंको) यज्ञ करने के लिये दिया।** सुखसेन गौडब्राह्मण सुख देने वाले एवं महान तेजस्वी हुये। उनको यज्ञ कराने के लिए उस उत्तम देश में व्यवस्थित किया॥ ४६—५० ॥

☛ भगवान् ब्रह्मा की आज्ञा से सुखसेन ऋषि ने भगवान् चित्रगुप्त के पुत्र को शिक्षित किया जो शिक्षित होकर **सुखसेन गौडब्राह्मण** हुए। सुखसेन गौड ही **सक्सेना** कहलाये। ये गुरु होकर हंस गोत्र का विस्तार किये।

☛ हंस ऋषि ने चित्रगुप्त के पुत्रों से यज्ञ करवाया था।

☛ भगवान् चित्रगुप्त के पुत्रों के साथ हंस ऋषि के पुत्र भी शिक्षित हुये थे, जो **सुखसेन, गौडब्राह्मण** हुये।

× × ×

भट्टनागर-कायस्थ, गौडब्राह्मण की उत्पत्ति

दशमं तस्य पुत्रं तु भट्टाख्यमुनये ददौ।
गृहीत्वा गतवान् सोऽपि भट्टकेश्वरसन्निधौ॥ ५१ ॥
भट्टेश्वरी यत्र देवी वर्तते जगदंबिका।
भट्टेश्वरो महादेवो यत्र शूली महेश्वरः॥ ५२ ॥
भट्टकेशाश्च कायस्थास्तदुत्पन्ना ह्यनेशकः।
तान् गुरुत्वेन संपाद्य भट्टनागरसंज्ञकाः॥ ५३ ॥

भगवान् ब्रह्मा ने **दशम पुत्र** भट्ट ऋषि को दिया। भट्टमुनि उस बालक को लेकर उस स्थान पर गये जहाँ **भट्टेश्वरदेव** एवं **भट्टेश्वरीदेवी** का निवास है। भट्टेश्वर महादेव त्रिशूलधारी महेश्वर के नाम से जाने जाते हैं। उनके गोत्र में भट्टकेश नाम के अनेकों कायस्थ उत्पन्न हुए। उनको भट्टनागर की संज्ञा दी गयी जो **गुरु** के रूप में प्रसिद्ध हुये॥ ५१—५४ ॥

☛ भगवान् ब्रह्मा की आज्ञा से भट्ट ऋषि ने भगवान् चित्रगुप्त के पुत्र को शिक्षित किया जो शिक्षित होकर **भट्टनागर गौडब्राह्मण** हुए। ये गुरु होकर भट्ट गोत्र का विस्तार किये।

☛ भगवान् चित्रगुप्त के पुत्रों के साथ भट्ट ऋषि के पुत्र भी शिक्षित हुये थे, जो **भट्टनागर गौडब्राह्मण** हुये।

× × ×

सूर्यध्वज-कायस्थ, गौडब्राह्मण की उत्पत्ति

एकादशं तु पुत्रं तु सौरभाय ददौ ततः।
सूर्यमंडलदेशे तु सौरभेश्वरसन्निधौ॥ ५४॥
यत्र सौरेश्वरी देवी वर्तते जगदंबिका।
सूर्यध्वजाश्च बहवो जातास्तेऽपि सहस्त्रशः॥ ५५॥
कायस्थास्तत्र विख्याता स्वधर्मनिरताः सदा।
सूर्यध्वजाश्च तच्छिष्या गुरुत्वे ते प्रकल्पिताः॥ ५६॥

भगवान् ब्रह्मा ने **एकादश पुत्र** सौरभ ऋषि को दिया। सौरभ ऋषि उन्हें लेकर सूर्य मण्डल देश में गये, जहाँ पर **सौरभेश्वरदेव** एवं **सौरेश्वरीदेवी** निवास करती हैं। वहाँ सूर्यध्वज कायस्थ हजारों की संख्या में उत्पन्न हुये। कायस्थ सूर्यध्वज गौड ब्राह्मण अपने धर्म में परायण रहने वाले प्रसिद्ध हुए। सूर्यध्वज गोत्रीय कायस्थ शिष्य, **गुरु** के रूप में प्रसिद्ध हुये॥ ५२—५६॥

☛ भगवान् ब्रह्मा की आज्ञा से सौरभ ऋषि ने भगवान् चित्रगुप्त के पुत्र को शिक्षित किया जो शिक्षित होकर **सूर्यध्वज गौडब्राह्मण** हुए। ये गुरु होकर सूर्यध्वज गोत्र का विस्तार किये।

भगवान् चित्रगुप्त के यह पुत्र सूर्य के सशक्त साधक थे, इसलिये यह 'सूर्यध्वज' कहलाये।

☛ भगवान् चित्रगुप्त के पुत्रों के साथ सौरभ ऋषि के पुत्र भी शिक्षित हुये थे, जो **सूर्यध्वज, गौडब्राह्मण** हुये। दोनों के उपनाम **सूर्यध्वज** ही हैं।

× × ×

माथुर-कायस्थ, गौडब्राह्मण की उत्पत्ति

द्वादशं तु सुतं तस्य माथुराय ददौ ततः।
माथुरेश्वरसान्निध्ये माथुरा विस्तृताः पुनः॥ ५७॥
माथुरेशी महादेवी वर्तते जगदंबिका।
माथुरीयाश्च गुरवो वर्तते बहवः स्मृताः॥ ५८॥

भगवान् ब्रह्मा ने **द्वादश पुत्र** माथुर ऋषि को दिया। माथुर ऋषि विस्तार करने के लिए माथुर देश चले गये जहाँ पर **माथुरेश्वरादेव** एवं **माथुरेश्वरीमहादेवी** विराजमान है। माथुर गोत्रीय बहुत से कायस्थ, **गुरु** के रूप में प्रसिद्ध हुये॥ ५७—५८॥

☛ भगवान् ब्रह्मा की आज्ञा से माथुर ऋषि ने भगवान् चित्रगुप्त के पुत्र को शिक्षित किया जो शिक्षित होकर **माथुर गौडब्राह्मण** हुए। ये गुरु होकर माथुर गोत्र का विस्तार किये।

☛ भगवान् चित्रगुप्त के पुत्रों के साथ माथुर ऋषि के पुत्र भी शिक्षित हुये थे, जो **माथुर, गौडब्राह्मण** हुये।

× × ×

एवं दत्त्वा तु तान् पुत्रान् ब्रह्मा लोक पितामहः।
उवाच वचनं श्लक्ष्णं ब्रह्मा मधुरया गिरा॥ ५९॥
पुत्रत्वे पालनीयाश्च लेखकाः सर्वदैव हि।
शिखासूत्रधरा ह्येते पटवः साधु संमता॥ ६०॥

इस प्रकार **ब्रह्मा ने** चित्रगुप्त के सभी पुत्रों को देकर, मधुर एवं सुन्दर वाणी से ऋषियों से कहा—चित्रगुप्त के इन पुत्रों को अपने पुत्र

के समान पालन करना, ये सभी सर्वदैव (सबके भाग्य) को लिखने वाले हैं, अत्यन्त निपुण तथा सज्जन हैं, ये कायस्थ अत्यन्त बुद्धिमान् एवं सिर पर शिखा (चोटी) एवं सूत्र (यज्ञोपवीत) धारण करने वाले साधु के समान होंगे॥ ५९—६०॥

☛ श्लोक संख्या १५ में भगवान् ब्रह्मा ने चित्रगुप्तजी को सभी प्राणियों के सर्वदैव (सबके भाग्य) लिखने का आदेश दिया था। इसी प्रकार भगवान् ब्रह्मा ने चित्रगुप्तजी के पुत्रों को भी दैव (भाग्य) लिखने का आदेश दिया था। इस लोक में वेद-पुराणों को भाग्य विधाता कहा गया है, धर्म के उत्तम कृत्य ही भाग्य को बदलते हैं। **भगवान् ब्रह्मा ने वेद-पुराणों तथा न्यायिक कार्यों को लिखने का आदेश चित्रगुप्तवंशीय कायस्थब्राह्मणों को दिया था।**

× × ×

द्वादश-कायस्थ, गौडब्राह्मणों का संस्कार

सूत उवाच—

एवमुक्त्वा विधायादौ यज्ञं ब्रह्मा ययौ स्वकम्।
सावित्र्या सहितः श्रीमानथ ये चित्रगुप्तकाः॥ ६१॥

सूत बोले—इस प्रकार चित्रगुप्त के विषय में बताकर एवं यज्ञ को पूर्ण करके **सावित्री (सरस्वती)** के साथ **श्रीमान् ब्रह्मा अपने ब्रह्मलोक को चले गये**॥ ६१॥

द्विजातीनां यथादानं यजनाध्ययने तथा।
कर्तव्यानीति कायस्थैः सदा तु निगमान् लिखेत्॥ ६२॥
पुराणपाठकाः सर्वे सर्वे तत्स्मृतिशंसकाः।
आतिथ्यं श्राद्धकर्तृत्वं सर्वेषां धर्मसाधनम्॥ ६३॥

(कायस्थानांसमुत्पत्ति, पाद्मे, उत्तरखण्डे)

द्विजों के समान **कायस्थ गौडों के लिये पढ़ना-पढ़ाना,**

यज्ञकरना-यज्ञकराना, दानदेना-दानलेना तथा वेद-पुराणों को लिखना, पुराणों का पाठ, स्मृतियों का पालन, आतिथ्य सेवा, श्राद्ध, तथा सभी प्रकार के धार्मिक कर्म को करना निश्चित किया गया है ॥ ६२—६३ ॥

× × ×

चित्रगुप्त वंशीय कायस्थ गौडब्राह्मणों का गोत्र

चित्रगुप्तवंशीय कायस्थ, जिस ऋषि के पास शिक्षित हुये, वही उनका गोत्र है। यथा—

निगम-**मांडव्यगोत्र**, वाल्मीकि-**वाल्मीकिगोत्र**, 'सुखसेन-**हंसगोत्र**,
गौड-**गौतमगोत्र**, अस्थाना-**वसिष्ठगोत्र**, 'भट्टनागर-**भट्टगोत्र**,
श्रीवास्तव-**श्रीहर्षगोत्र**, 'अम्बष्ट-**सौभरिगोत्र**, 'सूर्यध्वज-**सौरभगोत्र**,
कुलश्रेष्ठ-**हारीतगोत्र**, 'कर्ण-**दालभ्यगोत्र**, 'माथुर-**माथुरगोत्र**।

× × ×

द्वादश कायस्थों के वेद, शाखा एवं सूत्र की सारिणी

	कायस्थ	देवता-देवी	वेद	शाखा	सूत्र
१.	निगम कायस्थ	**शिव-शक्ति**	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	कात्यायन
२.	गौड कायस्थ	**शिव-शक्ति**	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	कात्यायन
३.	श्रीवास्तव कायस्थ	**शिव-शक्ति**	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	कात्यायन
४.	कुलश्रेष्ठ कायस्थ	**शिव-शक्ति**	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	कात्यायन
५.	वाल्मीकि कायस्थ	**शिव-शक्ति**	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	कात्यायन
६.	अस्थाना कायस्थ	**शिव-शक्ति**	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	कात्यायन
७.	अम्बष्ट कायस्थ	**शिव-शक्ति**	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	कात्यायन
८.	कर्ण कायस्थ	**शिव-शक्ति**	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	कात्यायन
९.	सुखसेन कायस्थ	**शिव-शक्ति**	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	कात्यायन
१०.	भट्टनागर कायस्थ	**शिव-शक्ति**	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	कात्यायन
११.	सूर्यध्वज कायस्थ	**शिव-शक्ति**	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	कात्यायन
१२.	माथुर कायस्थ	**शिव-शक्ति**	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	कात्यायन

द्वादश देवकुलीन ब्रह्मकायस्थ गौडब्राह्मणों एवं द्वादश ऋषिकुलीन गौडब्राह्मणों का संस्कार, देवता, वेद, शाखा, सूत्र इत्यादि एक ही हैं। ये दोनों ब्राह्मण एक ही हैं, इनमें केवल 'कुल' का भेद है। ब्रह्मकायस्थ 'देवकुल से' तथा शेष ब्राह्मण 'ऋषिकुल से' उत्पन्न हुये हैं।

द्वादशगौडब्राह्मण शैव मार्ग के हैं। पूर्वकाल से ही ब्रह्मकायस्थ शिव एवं शक्ति (दुर्गा एवं काली) के उपासक रहे हैं। भगवान् शिव का एक रूप 'अघोर' भी है। 'घोर' शब्द का अर्थ 'अंधकार' होता है। 'अ' 'घोर' का अर्थ है जो अंधकार रहित हो। इस मार्ग में मांस तथा मदिरा का सेवन वर्जित नहीं है। यह मार्ग अत्यन्त सशक्त एवं सिद्धिप्रद माना गया है।

बंगाल के सन्त पूजा-पाठ में मांस तथा मदिरा का बहुतायत प्रयोग करते हैं। इन सन्तों में ब्रह्मकायस्थ कुल से अनेक अर्न्तराष्ट्रीय सन्त हुए हैं।

सम्भवतः शिव-शक्ति के उपासक होने के कारण ही सम्पूर्ण भारत में पाये जाने वाले 'ब्रह्मकायस्थ' मांसाहारी हैं। ब्रह्मकायस्थों को इस प्रकृति का त्याग नहीं करना चाहिये क्योंकि ये महाकाल का धर्म है। अपने पिता महाकालचित्रगुप्त के समान क्रूर दण्डाधिकारी होकर प्रजा में न्याय देना ही ब्रह्मकायस्थों का धर्म है।

× × ×

द्वादश कायस्थों के वर्तमान एवं पूर्वकाल के उपनाम

कायस्थ के वर्तमान उपनाम	पूर्वगत उपनाम
१. निगम	उपाध्याय
२. गौड	उपाध्याय
३. श्रीवास्तव	उपाध्याय
४. कुलश्रेष्ठ	उपाध्याय
५. वाल्मीकि	उपाध्याय
६. अस्थाना	उपाध्याय
७. अम्बष्ट	उपाध्याय, पाण्डेय, शर्मा

८.	कर्ण	उपाध्याय, पाण्डेय, शर्मा
९.	सुखसेन	उपाध्याय, पाण्डेय, शर्मा
१०.	भट्टनागर	उपाध्याय, पाण्डेय, शर्मा
११.	सूर्यध्वज	उपाध्याय, पाण्डेय, शर्मा
१२.	माथुर	चतुर्वेदी, मिश्र, पाठक

सृष्टि के प्रारम्भ में जब भगवान् ब्रह्मा के आदेश से चित्रगुप्त वंशीय १२ ब्रह्मकायस्थ १२ ऋषियों के यहाँ शिक्षित हुए, उसके बाद ब्रह्मकायस्थों की पहचान परिवर्तित होकर द्वादश गौडब्राह्मण के रूप में हो गई। तभी से समाज में १२ ऋषि एवं चित्रगुप्त के पुत्र एक ही नाम से मांडव्यगौड, गौतमगौड, श्रीहर्षगौड, हारितगौड, वसिष्ठगौड, दालभ्यगौड, वाल्मीकिगौड, हंसगौड, सौरभगौड, सौभरिगौड, भट्टगौड तथा माथुरगौड, कहलाये।

× × ×

☛ भगवान् चित्रगुप्त एवं १२ ऋषि पुत्रियों से उत्पन्न १२ कायस्थ ब्राह्मणों का पद्मपुराण-उत्तरखण्डोक्त वर्णन आपने पढ़ा। उनकी उत्पत्ति एवं संस्कार के सभी साक्ष्य **उज्जैन एवं उज्जैन के निकट कायथा** सहित अनेक स्थानों पर विद्यमान हैं।

भगवान चित्रगुप्त के १२ पुत्रों का विवरण

१. निगम कायस्थब्राह्मण—'कायस्थानांसमुत्पत्ति' के अनुसार ब्रह्मा ने चित्रगुप्त के प्रथम पुत्र को सर्वप्रथम माण्डव्यऋषि को शिक्षा देने के लिए सौंपा था। शिक्षा के उपरान्त माण्डव्य ऋषि के शिष्य तथा चित्रगुप्त के पुत्र 'निगम' ब्रह्मकायस्थ गौडब्राह्मण कहलाये। यह नैगम कायस्थ मुगलकाल के पूर्व महापण्डित के नाम से विख्यात थे। निगम कायस्थ काशी में जाकर वेदों का अध्ययन किया करते थे। इसीलिए उनका नाम वेदों के नाम पर पड़ा है, वेदों को ही 'निगम' कहा जाता है। वेदों के मर्मज्ञ होने के कारण यह नैगम नाम से जाने जाते थे।

पूर्व काल में नैगम कायस्थों का वास मालवा क्षेत्र हुआ करता था। इसी स्थान पर माण्डव्य ऋषि के पुत्र मालवीय गौड ब्राह्मण भी निवास करते थे।

२. गौड कायस्थब्राह्मण—ब्रह्मा ने चित्रगुप्त के द्वितीय पुत्र गौतम ऋषि को शिक्षा देने के लिए सौंपा था। शिक्षा के उपरान्त गौतम ऋषि के शिष्य तथा चित्रगुप्त के पुत्र 'गौड' ब्रह्मकायस्थ, गौडब्राह्मण कहलाये। ये आजमगढ़, वाराणसी तथा प्रयाग क्षेत्र में बहुतायत पाये जाते हैं।

३. श्रीवास्तव कायस्थब्राह्मण—ब्रह्मा ने चित्रगुप्त के तृतीय पुत्र श्रीहर्ष ऋषि को शिक्षा देने के लिए सौंपा था। शिक्षा के उपरान्त श्रीहर्ष ऋषि के शिष्य तथा चित्रगुप्त के पुत्र 'श्रीवास्तव' ब्रह्मकायस्थ गौडब्राह्मण कहलाये। यह पूर्वी उत्तर प्रदेश से लेकर पश्चिमी बिहार के क्षेत्र में (लखनऊ से पटना तक) बहुतायत पाये जाते हैं। श्रीवास्तव कायस्थ कुल में अनेक महापुरुष उत्पन्न हुये हैं।

४. श्रेणीपति (कुलश्रेष्ठ) कायस्थब्राह्मण—ब्रह्मा ने चित्रगुप्त के चतुर्थ पुत्र हारीत ऋषि को शिक्षा देने के लिए सौंपा था। शिक्षा के उपरान्त हारीत ऋषि के शिष्य तथा चित्रगुप्त के पुत्र श्रेणीपति (कुलश्रेष्ठ) ब्रह्मकायस्थ गौडब्राह्मण कहलाये। यह हरियाणा से लेकर सिन्ध तक बहुतायत पाये जाते हैं। यह सिन्ध में **कामिल, फाजिल, आमिल एवं आडवानी कहे जाते हैं।**

५. वाल्मीकि कायस्थब्राह्मण—ब्रह्मा ने चित्रगुप्त के पंचम पुत्र वाल्मीकि ऋषि को शिक्षा देने के लिए सौंपा था। शिक्षा के उपरान्त वाल्मीकि ऋषि के शिष्य तथा चित्रगुप्त के पुत्र 'वाल्मीकि' ब्रह्मकायस्थ गौडब्राह्मण कहलाये। पूर्व काल में ऋषियों ने इन कायस्थों को गुरु की संज्ञा दी थी। **वाल्मीकि ऋषि ने एक यज्ञ का आयोजन किया था जिसमें उन्होंने चित्रगुप्त के पुत्रों से यज्ञ करवाया।** यह कायस्थ राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्र में पाये जाते हैं।

६. वसिष्ठ (अस्थाना) कायस्थब्राह्मण—ब्रह्मा ने चित्रगुप्त के षष्ठम् पुत्र वसिष्ठ ऋषि को शिक्षा देने के लिए सौंपा था। शिक्षा के उपरान्त वसिष्ठ ऋषि के शिष्य तथा चित्रगुप्त के पुत्र 'अस्थाना' ब्रह्मकायस्थ गौडब्राह्मण कहलाये। यह उत्तर प्रदेश में अयोध्या क्षेत्र के आस-पास बहुतायत पाये जाते हैं।

७. सौरभ (अम्बष्ट) कायस्थब्राह्मण—ब्रह्मा ने चित्रगुप्त के सप्तम् पुत्र सौभरि ऋषि को शिक्षा देने के लिए सौंपा था। शिक्षा के उपरान्त सौभरि ऋषि के शिष्य तथा चित्रगुप्त के पुत्र 'अम्बष्ट' ब्रह्मकायस्थ गौडब्राह्मण कहलाये। यह बिहार में गया क्षेत्र के आस-पास बहुतायत पाये जाते हैं।

८. दालभ्य (कर्णम्) कायस्थब्राह्मण—ब्रह्मा ने चित्रगुप्त के अष्टम पुत्र को दालभ्य ऋषि को शिक्षा के लिए सौंपा था। शिक्षा के उपरान्त दालभ्य ऋषि के शिष्य तथा चित्रगुप्त के पुत्र 'दालभ्य' कायस्थ गौडब्राह्मण कहलाये। पूर्वकाल में इनका निवास कर्णाटक में हुआ करता था। इसलिये इन्हें कर्ण/कर्णम् कायस्थ के नाम से जाना जाता है। दालभ्य ऋषि ने चित्रगुप्त के पुत्रों से यज्ञ करवाया था। आसाम, बंगाल, उड़ीसा, पूर्वी बिहार, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु तथा केरल में पाये जाने वाले कायस्थ, कर्ण कायस्थ ही हैं। इन कर्ण कायस्थों को भारत के कई राज्यों में **कर्णम्, नियोगी** एवं **अरूवेलम नियोगी ब्राह्मण** भी कहा जाता है।

यह भारत में कायस्थ जाति में सबसे अधिक संख्या में विद्यमान हैं तथा इनकी स्थिति अत्यन्त सबल है। आसाम, बंगाल, पूर्वी बिहार, उड़ीसा, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु एवं केरल में पाये जाने वाले कायस्थ **कर्ण/कर्णम्**' ही हैं। उड़ीसा में स्थित कर्णम् कायस्थ ब्राह्मण के लिए बताये गये ६ कर्म पढ़ना-पढ़ाना, यज्ञकरना-यज्ञकराना तथा दानलेना-दानदेना इत्यादि किया करते हैं। यह उड़ीसा में यज्ञ तथा श्राद्ध इत्यादि कर्मों को भी कराते हैं। इनके उपनाम—पाणिग्रही, महापात्र, मुनी, नायक इत्यादि हैं।

आसाम राज्य में—इन कर्ण/कर्णम् कायस्थों का उपनाम मोहन्तो, बरूआ, चक्रवर्ती, पुरूकायस्थ, वेद्य एवं चौधरी है।

बंगाल राज्य में—इन कर्ण/कर्णम् कायस्थों का उपनाम घोष, बोस (बसु), मित्र, रे (रॉय), सेन, डे, नन्दी, सिन्हा, बर्मन, गुहा, चौधरी, गुप्त, भद्र, नाग, सरकार, दत्त इत्यादि हैं।

बिहार राज्य में—इन कर्ण/कर्णम् कायस्थों का उपनाम दास, कर्ण, दत्त, मल्लिक, चौधरी, कंठ, वर्मा, सिन्हा, लाल इत्यादि।

उड़ीसा राज्य में—इन कर्ण/कर्णम् कायस्थों का उपनाम पटनायक, पाटस्कर, मोहन्ती, कानूनगो, चौधरी, मर्दराज, वाहियार, महापात्र, दास, दत्त, नन्दा, पाणिग्रही, त्रिपाठी, मिश्रा, मुनी, नायक इत्यादि है।

आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक एवं तमिलनाडु राज्य में—आन्ध्र प्रदेश में कर्णम् कायस्थों को **नियोगी** एवं **अरूवेलम नियोगी ब्राह्मण** भी कहा जाता है। यह आन्ध्र प्रदेश में गैर पुजारी ब्राह्मण के नाम से पहचाने जाते हैं। मूलतः यह कर्ण कायस्थ हैं। इन कर्ण/कर्णम् कायस्थों का उपनाम नायडू, नायर , मुदलियार, राज, मेमन, राव, करनाम, लाल, काणिक, रेड्डी एवं प्रसाद है।

केरल प्रदेश में—इन कर्ण/कर्णम् कायस्थों का उपनाम पिल्लै अथवा पिल्लई है।

९. सुखसेन (सक्सेना) कायस्थब्राह्मण—ब्रह्मा ने चित्रगुप्त के नवम् पुत्र को सुखसेन ऋषि को शिक्षा देने के लिए सौंपा था। शिक्षा के उपरान्त सुखसेन ऋषि के शिष्य तथा चित्रगुप्त के पुत्र सुखसेन (सक्सेना) ब्रह्मकायस्थ गौडब्राह्मण कहलाये। सुखसेन ऋषि ने चित्रगुप्त के पुत्रों से यज्ञ भी करवाया था। यह पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बरेली के आस-पास बहुतायत पाये जाते हैं।

१०. भटनागर कायस्थब्राह्मण—ब्रह्मा ने चित्रगुप्त के दशम् पुत्र भट्ट ऋषि को शिक्षा देने के लिए सौंपा था। शिक्षा के उपरान्त भट्ट ऋषि के शिष्य तथा चित्रगुप्त के पुत्र 'भटनागर' ब्रह्मकायस्थ गौडब्राह्मण कहलाये। यह हरियाणा एवं राजस्थान के क्षेत्र में बहुतायत पाये जाते हैं।

११. सूर्यध्वज कायस्थब्राह्मण—ब्रह्मा ने चित्रगुप्त के एकादश पुत्र सौरभ ऋषि को शिक्षा देने के लिए सौंपा था। शिक्षा के उपरान्त सौरभ ऋषि के शिष्य तथा चित्रगुप्त के पुत्र 'सूर्यध्वज' ब्रह्मकायस्थ गौडब्राह्मण कहलाये। यह राजस्थान में बहुतायत पाये जाते हैं।

१२. माथुर कायस्थब्राह्मण—ब्रह्मा ने चित्रगुप्त के द्वादश पुत्र को माथुर ऋषि को शिक्षा के लिए सौंपा था। शिक्षा के उपरान्त माथुर ऋषि के शिष्य तथा चित्रगुप्त के पुत्र 'माथुर' ब्रह्मकायस्थ गौडब्राह्मण कहलाये। यह कायस्थ उत्तर प्रदेश में मथुरा से लेकर सम्पूर्ण राजस्थान में पाये जाते हैं। यह वहाँ सशक्त स्थिति में हैं।

× × ×

यह १२ ब्रह्मकायस्थ भगवान् चित्रगुप्त के वंशज हैं।

१ चन्द्रसेनीय कायस्थ हैं। जिसे परशुराम ने कायस्थ बनाया था। यह १३ कायस्थ ही सनातन हैं।

× × ×

चित्रगुप्तवंशीय महाविभूतियाँ

सन्त



श्रीमन्त शंकरदेव—इनका जन्म आसाम के नगॉव जिले में सन् १४४९ ई० में हुआ था। आसाम में 'एकशरणनामधर्म महापुरुषीय सम्प्रदाय' के संस्थापक थे। यह आसाम के सर्वोच्च संत हैं।



देवचन्द्रजी महाराज—इनका जन्म राजस्थान के मारवाड़ जिले में सन् ११ अक्टूबर १५८१ को हुआ था। **'प्रणामी सम्प्रदाय'** के संस्थापक थे। यह उच्च स्तर के संतों में से एक थे।



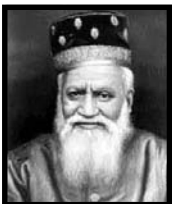
स्वामी विवेकानन्द—इनका नाम **नरेन्द्र दत्त** था। इनका जन्म पश्चिम बंगाल के कलकत्ता में सन् १२ जनवरी १८६३ ई० को हुआ था। **यह विश्व के शीर्षस्थ सन्तों में से एक हैं। यह 'रामकृष्ण मिशन' के संस्थापक थे।** इन्होंने सर्वधर्म महासभा शिकागो में ११ सितम्बर १८९३ से लेकर २६ सितम्बर १८९३ (१६ दिनों तक) प्रवचन दिया।



श्रीअरबिन्दो घोष—इनका जन्म कलकत्ता में १५ अगस्त १८७२ को हुआ था। उत्कृष्ट क्रान्तिकारी एवं स्वतन्त्रता सेनानी हैं।



महर्षि महेश योगी—इनका नाम **महेश प्रसाद वर्मा** था। जन्म जबलपुर में १२ जनवरी १९१८ को हुआ था।



राय शालिग्राम—इनका जन्म आगरा में १४ मार्च १८२९ को हुआ था। यह **'राधास्वामी सत्संग'** के संस्थापक थे।



परमहंस योगानंद—इनका नाम **मुकुन्द लाल घोष** था। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले में ५ जनवरी १८९३ को हुआ था।



स्वामी प्रभुपाद—इनका नाम **अभय चरण डे** था तथा जन्म पश्चिम बंगाल के कलकत्ता में १ सितम्बर १८९६ को हुआ था।

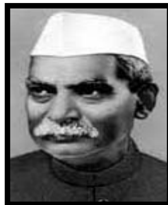


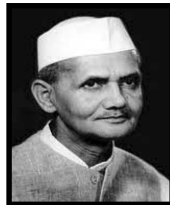
प्रभात रंजन सरकार—इनका जन्म जमालपुर में २१ मई १९२१ को हुआ था। यह **'आनन्दमार्ग'** के संस्थापक हैं।

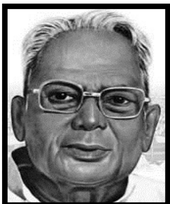
स्वतन्त्रता सेनानी


सुभाष चन्द्र बोस


खुदीराम बोस

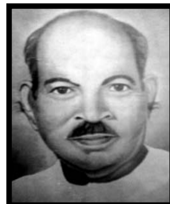

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद


लाल बहादुर शास्त्री

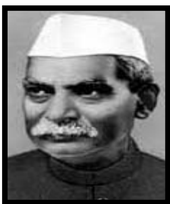

जयप्रकाश नारायण


गणेश शंकर विद्यार्थी

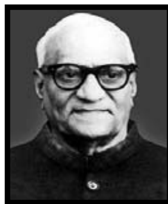

बिपिन चन्द्रपाल

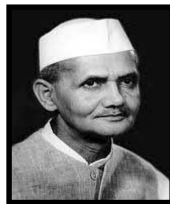

सिब्बन लाल सक्सेना

राजनीतिज्ञ


डॉ० राजेन्द्र प्रसाद

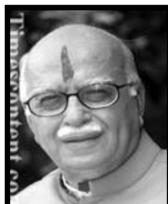

डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्


वी०वी०गिरि


लाल बहादुर शास्त्री


पी०वी०नरसिम्हाराव


जयप्रकाश नारायण

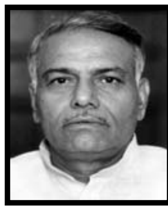


लाल कृष्ण आडवानी


सुबोध कान्त सहाय


रविशंकर प्रसाद


शत्रुघ्न सिन्हा


यशवन्त सिन्हा


ज्योति बसु

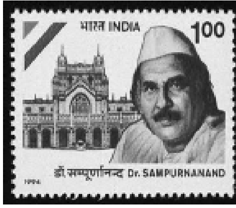

बीजू पटनायक


शिवचरन माथुर


वैन्कैया नायडू


नवीन पटनायक


चन्द्रबाबू नायडू



डा० सम्पूर्णानन्द

☞ डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्, वी० वी० गिरि, पी० वी० नरसिम्हाराव, वैन्कैया नायडू तथा चन्द्रबाबू नायडू कर्ण कायस्थ हैं। इन्हें तमिलनाडु, कर्नाटक एवं आन्ध्र प्रदेश में कर्णम्, नियोगी एवं अरूवेलम नियोगी ब्राह्मण कहा जाता है।

☞ सर्वपल्ली राधाकृष्णन् उच्च स्तर के विद्वान थे। इनका जन्म 05-09-1888 को मद्रास (चेन्नई) के तिरुत्तनि नामक स्थान पर हुआ था। इनके जन्मदिन 05 सितम्बर को '**शिक्षक दिवस**' के रूप में मनाया जाता है।

☞ डा० राजेन्द्र प्रसाद के जन्मदिन 03 दिसम्बर को '**अधिवक्ता दिवस**' के रूप में मनाया जाता है।

☞ लालकृष्ण आडवानी सिंधी कायस्थ हैं। यह सिंधी कायस्थ सिंध में आलिभ, फाजिल, आमिल तथा आडवानी उपनाम लिखते हैं। मूलतः यह चित्रगुप्त वंशीय कुलश्रेष्ठ कायस्थ हैं।

× × ×

विज्ञान एवं तकनीकी



डॉ० सत्येन्द्र नाथ बोस



डॉ० जगदीश चन्द्र बोस



डॉ० शांति स्वरूप भटनागर



डॉ० प्रभुदयाल भटनागर

नोबल पुरस्कार



प्रो० शिशिर कुमार मित्रा



अमर्त्य सेन

☛ डा० सत्येन्द्र नाथ बोस विश्व के सर्वोच्च वैज्ञानिकों में से एक हैं। इन्होंने अणु के पार्टिकल की खोज की थी। इन्हीं के नाम से अणु के पार्टिकल का नाम 'बोसान' है। इन्होंने आईन्सटीन नाम के वैज्ञानिक के साथ मिलकर स्टैटिस्टिक्स नामक विषय की भी खोज की थी। इस विषय को सम्पूर्ण विश्व में भौतिक विज्ञान एवं गणित के छात्रों को पढ़ाया जाता है। आज विश्व की सर्वोच्च वैज्ञानिक संस्था नासा 'गॉड पार्टिकल' पर शोध कर रहा है। नासा ने इस शोध को डा० सत्येन्द्र नाथ बोस के नाम पर 'हिग्स बोसोन' रखा है।

☛ डा० जगदीश चन्द्र बोस ने मनुष्य एवं पशुओं की भाँति वनस्पतिओं में भी प्राण एवं संवेदनायें होती हैं, इसे सिद्ध करके सम्पूर्ण विश्व को चकित कर दिया था। इस विषय को सम्पूर्ण विश्व में जीव विज्ञान के छात्रों को पढ़ाया जाता है।

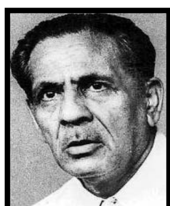
☛ डा० शांति स्वरूप भटनागर को १९५४ में पद्मविभूषण के सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है। इन्होंने भारत को अन्तरिक्ष कार्यक्रम (स्पेस प्रोग्राम), चुम्बकीय-रसायनिक (मैग्नेटिक कैमेस्ट्री) एवं औद्योगिक रसायन (इन्डस्ट्रीयल कैमेस्ट्री) के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धि दिलायी है। इनके नाम से आज भी भारत सरकार के तरफ से प्रतिवर्ष वैज्ञानिकों को डा० शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार से पुरस्कृत किया जाता है।

× × ×

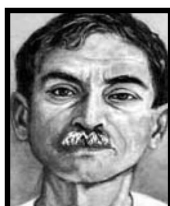
साहित्यकार



श्रीअरबिन्दो घोष



फिराक गोरखपुरी



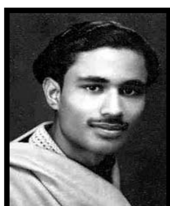
मुन्शी प्रेमचन्द्र



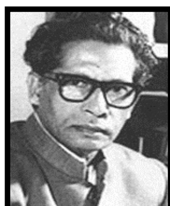
महादेवी वर्मा



भगवती चरन वर्मा



धर्मवीर भारती



हरिवंश राय बच्चन



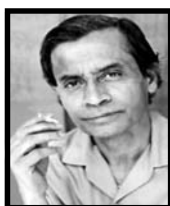
प्रेमेन्द्र मित्रा



निर्मल वर्मा



बिमल मित्रा



बुद्धदेव बोस

फिल्म, टेलीविजन एवं संगीत

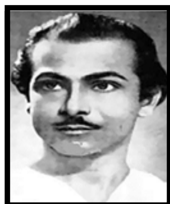

चित्रगुप्त


मन्ना डे

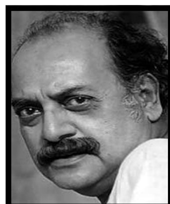

मुकेश चन्द्र माथुर


सुचित्रा सेन


मोतीलाल


सलील चौधुरी


असित सेन


उत्पल दत्त


अमिताभ बच्चन


मुनमुन सेन


सुस्मिता सेन

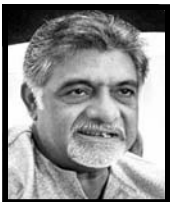

नितिन मुकेश


सोनाक्षी सिन्हा


पहलाज नेहलानी


गोपाल दास 'नीरज'


आनन्द मिलिन्द



अंजन श्रीवास्तव



शरद सक्सेना



सोनू निगम



शेखर सुमन



राजू श्रीवास्तव



आदेश श्रीवास्तव



नीतू चन्द्रा

× × ×

अब तक आपने जिन कायस्थ महापुरूषों को देखा है वह सम्पूर्ण नहीं हैं। अभी कायस्थ कुल से हजारों महापुरूष पड़े हैं। यदि सबका विवरण दिया जाय तो एक वृहद् ग्रन्थ तैयार हो जायेगा। यह विवरण तो केवल उदाहरण मात्र है।

आज भारत की विश्वस्तरीय पहचान में इन कायस्थब्राह्मणों का महत्वपूर्ण योगदान है।

भगवान् चित्रगुप्त एवं उनके द्वादश पुत्रों के विषय में वृहद् जानकारी के लिये **लोकशासकमहाकालचित्रगुप्तः तथा च ब्रह्मकायस्थगौडब्राह्मणाः** नामक ग्रन्थ को **सनातनधर्म ट्रस्ट, गोरखपुर** से मंगा कर पढ़े।

चांद्रसेनीयकायस्थोत्पत्ति

चांद्रसेनीय कायस्थ राजा चन्द्रसेन के वंशज हैं। परशुराम की आज्ञा से दालभ्य ऋषि ने इन्हें क्षत्रिय से कायस्थ ब्राह्मण बनाया था, यह घटना त्रेतायुग के प्रारम्भ की है।

स्कन्द उवाच

एवं हत्वार्जुनं रामः संधाय निशिताञ्छरान्।
अन्वधावत्स तान्हंतुं सर्वानेवासुरान्नृपान्॥ १ ॥
तदा रामभयात्सर्वे नानावेषधरानृपाः।
स्वस्वस्थानं परित्यज्य यत्र कुत्र गताः किल॥ २ ॥
सगर्भो चंद्रसेनस्य भार्या दाल्भ्याश्नमं गता।
ततो रामः समायातो दाल्भ्याश्रममनुत्तमम्॥ ३ ॥
पूजितो मुनिना रामो भोजनार्थं समुद्यतः।
भोजनावसरे तत्र गृहीत्वापोशन करे॥ ४ ॥
रामस्तु याचयामास हृदिस्थं स्वमनोरथम्।
तस्मै प्राददृधिः कामं भार्गवाय महात्मने॥ ५ ॥
याचयामास रामाद्वै कामं दाल्भ्यो महामुनिः।
ततो द्वौ परमप्रीतौ भोजनं चक्रतुर्मुदा॥ ६ ॥
भोजनांते महाभागावासने चोपविश्य।
तांबूलानंतरं दाल्भ्यः पप्रच्छ भार्गवं प्रति॥ ७ ॥
यत्त्वया प्रार्थित देव तत्त्व शंसितुमर्हसि।

स्कन्द बोले—इस प्रकार परशुराम तीक्ष्ण बाणों से सहस्त्रार्जुन का वध करके असुर-राजाओं को मारने के लिए दौड़े तब वे राजा

परशुराम के भय से अनेक वेश धारण करके अपने–अपने स्थान को छोड़कर इधर–उधर चले गये। उस समय राजा चन्द्रसेन की गर्भवती पत्नी दालभ्य मुनि के आश्रम पर गयी हुई थी। संयोग से परशुराम भी दालभ्य मुनि के आश्रम पर आ पहुँचे। दालभ्य मुनि द्वारा पूजा किये जाने के बाद परशुराम भोजन के लिए प्रस्थान किए। भोजन के समय हाथ में जल एवं भोजन लेकर दालभ्य मुनि ने परशुराम से अपने लिए मनोकामना माँगी। दालभ्य मुनि के याचना को परशुराम ने स्वीकार किया और इस प्रकार दोनों ने प्रसन्नता पूर्वक भोजन किया। भोजन के पश्चात् ताम्बूल आदि को सेवन करने के बाद दालभ्य मुनि ने परशुराम से कहा–हे देव आपने जो कुछ कहा है उसका मैं पालन करूँगा।। १–७।।

राम उवाच

तवाश्रमे महाभाग सगर्भा स्त्री समागता॥ ८ ॥
चंद्रसेनस्य राजर्षेस्तां देहि त्वं महामुने।
ततो दाल्भ्यः प्रत्युवाच ददामि तव वांछितम्॥ ९ ॥
यन्मया प्रार्थितं देव तन्मे दातुं त्वमर्हसि।
ततः स्त्रियं समाहूय चंद्रसेनस्य वै मुनिः॥ १० ॥
भीता सा चपलापांगी कंपमाना समागता।
रामाय प्रददौ तत्र ततः प्रीतमना अभूत्॥ ११ ॥

परशुराम बोले—हे मुनि! आपके आश्रम में कोई गर्भवती स्त्री आयी हुई है, वह राजा चन्द्रसेन की पत्नी है, उसे मुझको सौंप दें। इस पर दालभ्य मुनि ने कहा—हे भगवन् मैं आप के इच्छानुसार इसे सौंप दूँगा। किन्तु मैंने पहले जो आपसे माँगा है, वह वर मुझे

दीजिए। इसके बाद दाल्भ्य मुनि ने चन्द्रसेन की पत्नी को बुलाया वह चञ्चल नेत्रवाली काँपती हुई परशुराम के पास आयी और उसे सौंपने पर परशुराम अत्यन्त प्रसन्न हुए॥ ८—११ ॥

राम उवाच

यत्त्वया प्रार्थितं विप्र भोजनावसरे पुरा।
तन्मे शंस महाभाग ददामि तव वांछितम्॥ १२ ॥

परशुराम बोले—हे मुनि! भोजन के समय में मुझसे जो आपने माँगा था, मैं उसको स्वीकार करता हूँ तथा आप के इच्छानुसार उसे देता हूँ॥ १२ ॥

दाल्भ्य उवाच

प्रार्थितं यन्मया पूर्वं राम देव जगद्गुरो।
स्त्रीगर्भस्थममुं बालं तन्मे दातुं त्वमर्हसि॥ १३ ॥
ततो रामोऽब्रवीद्दाल्भ्य यदर्थमिह चागतः।
क्षत्रियांतकरश्चाहं तत्त्व याचितवानसि॥ १४ ॥
प्रार्थितं च त्वया विप्र कायस्थं गर्भमुत्तमम्।
तस्मात्कायस्थ इत्याख्या भविष्यति शिशोः शुभा॥ १५ ॥
जायमानस्तदा बालः क्षात्रधर्मा भविष्यति।
दुष्टाद्वै क्षात्रधर्मात्तु त्वं वारयितुमर्हसि॥ १६ ॥
ततो दाल्भ्यः प्रत्युवाच भार्गवं प्रति हर्षितः।
मा कुरुष्वात्र संदेहं दुर्बुद्धिर्न भविष्यति॥ १७ ॥
एवं रामा महाबाहुर्हित्वा तं गर्भमुत्तमम्।
निर्जगामाश्रमात्तस्मात्क्षत्रियांतकरः प्रभुः॥ १८ ॥

दालभ्य बोले—हे जगद्गुरु परशुराम! मैंने जो पहले आपसे मनोकामना माँगी थी, उसे देते हुए इस स्त्री के गर्भ में स्थित बालक को मुझे देने की कृपा कीजिए। इसे सुनकर परशुराम ने कहा कि मेरा नाम क्षत्रियान्तक है। क्षत्रियों को समाप्त करने के लिए ही मैं आया हूँ, आप ने मुझसे यही माँग लिया। हे ब्राह्मण इस स्त्री के गर्भ में स्थित होने के कारण यह बालक जन्म लेने के पश्चात् कायस्थ नाम से विख्यात होगा। यद्यपि यह बालक जन्म से क्षत्रिय कुल का है, परन्तु आप इसे दुष्ट क्षत्रिय धर्म से रोक दीजिएगा। इस पर दालभ्य मुनि ने प्रसन्न होकर कहा—हे परशुराम! आप आश्वस्त रहें, यह बालक दुष्ट बुद्धि का नहीं होगा। इस प्रकार क्षत्रियों का नाश करने वाले परशुराम उस गर्भस्थ शिशु को छोड़कर अपने आश्रम चले गये।। १३—१८।।

स्कंद उवाच

कायस्थ एष उत्पन्नः क्षत्रिण्यां शत्रियात्ततः।
रामाज्ञया स दाल्भ्येन क्षत्रधर्माद्बहिष्कृतः॥ १९॥
दत्तः कायस्थधर्मोऽस्म चित्रगुप्तस्य यः स्मृतः।
तदंशजाश्च कायस्था दाल्भ्यगोत्रास्ततोऽभवन्॥ २०॥
दाल्भ्योपदेशतस्ते वै धर्मिष्ठाः सत्यवादिनः।
सदाचाररता नित्यं रता हरिहरार्चने॥ २१॥
देवविप्रपितॄणां वै ह्यतिथीनां च पूजकाः।
यज्ञदानतपः शीला व्रततीर्थरताः सदा॥ २२॥

(चांद्रसेनीयकायस्थोत्पत्तिमाहस्कांदेरेणुकामाहात्म्य)

स्कन्द बोले—दालभ्य मुनि ने क्षत्रिय कुल में उत्पन्न होते हुए भी परशुराम की आज्ञानुसार चन्द्रसेन के पुत्र को क्षत्रिय धर्म से बहिष्कृत कर दिया। राजा चन्द्रसेन के पुत्र को दालभ्य मुनि ने '**चित्रगुप्त के कायस्थ धर्म**' का उपदेश दिया, जो बाद में '**चन्द्रसेनी कायस्थ**' नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसी समय से चन्द्रसेन के वंशज दालभ्य गोत्र के हो गये। दालभ्य मुनि के उपदेश से वे सत्यवादी, धार्मिक, सदाचारी और निरन्तर विष्णु और शिव के उपासना में तत्पर हो गये। देवता, ब्राह्मण, पितरों एवं अतिथियों की पूजा करने वाले तथा यज्ञ, दान तथा तपस्या में तत्पर रहने वाले तथा निरंतर व्रत एवं तीर्थों का भ्रमण करते हुए समय यापन करने लगे॥ १९-२२॥

☛ उपर्युक्त चांद्रसेनीय कायस्थ पूर्वकाल में क्षत्रिय वंश के थे जिसे परशुराम की आज्ञा से दालभ्य ऋषि ने क्षत्रिय संस्कार से बहिष्कृत कर, चित्रगुप्त के कायस्थ संस्कार दिया था, तभी से यह चांद्रसेनीय कायस्थ के नाम से जाने जाते हैं। यद्यपि यह चित्रगुप्त वंशीय कायस्थ नहीं हैं, तथापि इनका कार्य भी कायस्थों की भाँति '**पढ़ना-पढ़ाना, यज्ञकरना-यज्ञकराना, दानदेना-दानलेना एवं वेद-पुराणों को लिखना है।**' यह मध्यप्रदेश के दक्षिणी हिस्से से लेकर महाराष्ट्र क्षेत्र के आस-पास बहुतायत पाये जाते हैं तथा इनकी स्थिति अत्यन्त सबल है।

यह घटना परशुराम के काल की तथा त्रेतायुग के प्रारम्भ की है उस काल में भी चित्रगुप्तवंशीय कायस्थ विद्यमान थे, तभी परम पूज्य महाबली, महाज्ञानी परशुराम ने चन्द्रसेन के पुत्र को चित्रगुप्तवंशीय 'कायस्थ' के धर्म का पालन करने का आदेश दालभ्य ऋषि को दिया था।

परशुराम जानते थे कि राजा चन्द्रसेन चन्द्रमा के कुल में उत्पन्न देवपुत्र

हैं, इसीलिये उनके पुत्र को भी, देवकुलीन कायस्थ ब्राह्मण में समाहित करने का आदेश दालभ्य ऋषि को दिया था। परशुराम ने धर्म का ध्यान रखते हुये चन्द्रसेन के 'देवपुत्र' को, कायस्थ देवपुत्रों के साथ जोड़ा था।

चांद्रसेनीय कायस्थों के उपनाम—ठाकरे, पठारे, **चंद्रसेनी, प्रभु,** चित्रे, मथरे, **देशपांडे,** करोड़े, दोदे, तम्हणे, सुले, राजे, शागले, मोहिते, तुगारे, फड़से, **आप्टे,** रणदिये, **गडकरी, कुलकर्णी, श्राफ, वैद्य,** जयवंत, समर्थ, दलवी, **देशमुख,** मौकासी, चिटणवीस, कोटनिस, कारखनो, फरणीस, **दिघे,** धारकर, **प्रधान** इत्यादि। यह महाराष्ट्र के आस–पास के क्षेत्र में अत्यन्त ही शक्तिशाली स्थिति में हैं।

× × ×



बाला साहेब ठाकरे



उद्धव ठाकरे



राज ठाकरे



नितिन गडकरी

भारत के विभिन्न प्रान्तों में कायस्थ ब्राह्मणों के उपनाम

उत्तर भारत	–	निगम, गौड, श्रीवास्तव, कुलश्रेष्ठ, वाल्मीकि, अस्थाना, अम्बष्ट, कर्ण, सक्सेना, भटनागर, सूर्यध्वज, माथुर आदि।
आसाम	–	बरूवा, चक्रवर्ती, पुरूकायस्थ, वेद्य, मोहन्तो, चौधरी आदि।
बंगाल	–	सेन, कार, पालित, चंद्र, साहा, भद्रधर, नंदी, घोष, बोस, मल्लिक, मुंशी, डे, पाल, रे (राय), गुहा, वैद्य, नाग, सोम, सिन्हा, रक्षित, अकुर, नंदन, नाथ, विश्वास, सरकार, चौधरी, बर्मन, भावा, गुप्त, मृत्युंजय, दत्ता, कुन्डु, मित्र, धर, शर्भन, भद्र, भौमिक आदि।
उड़ीसा	–	कर्ण, कर्णम, पटनायक, पाटस्कर, कानूनगो, मल्लिक, मोहन्ती (महन्त), चौधरी, मर्दराज, सेनापति, वाहियार, महापात्र, दास, नन्दा, पाणिग्रही, त्रिपाठी, मिश्रा, मुनी, दत्ता, नायक आदि।
बिहार	–	कर्ण, दत्ता, दास, मल्लिक, चौधरी, कंठ, वर्मा, सिन्हा, लाल आदि।
दक्षिण भारत	–	मुदलियार, नायडू, पिल्ले, नायर, राज, मेमन, रमन, राव, करनाम, लाल, काणिक, रेड्डी, प्रसाद। दक्षिण भारत में ये उपनाम कर्ण कायस्थों के हैं।
राजस्थान	–	गुप्त नन्द, शर्भन, फुत्तू, भावेकदानवास, माथुर,

		नाग आदि।
महाराष्ट्र	–	पठारे, चंद्रसेनी, प्रभु, चित्रे, मथरे, ठाकरे, देशपांडे, करोड़े, दोदे, तम्हणे, सुले, राजे, शागले, मोहिते, तुगारे, फड़से, आप्टे, रणदिये, गडकरी, कुलकर्णी, श्राफ, वेद्य, जयवत, समर्थ, दलवी, देशमुख, मौकासी, चिटणवीस, कोटनिस, कारखनो, फरणीस, दिघे, थारकर, प्रधान आदि। **ये चन्द्रसेनीय कायस्थ हैं।**
गुजरात	–	चंद्रसेनी, प्रभु, मेहता, बल्लभी, वाल्मीकि, सूर्यध्वज आदि। **इनमें चित्रगुप्तवंशीय तथा चन्द्रसेनीय कायस्थ भी हैं।**
सिन्ध	–	आलिभ, फाजिल, आमिल, आडवानी आदि।
पंजाब	–	राय, बक्शी, दत्त, सिन्हा, बोस आदि।
नेपाल	–	श्रेष्ठ, वैद्य, चक्रवर्ती, सिन्हा आदि।

☛ आसाम, बंगाल, पूर्वी बिहार, उड़ीसा, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु तथा केरल में विद्यमान सभी कायस्थ, कर्ण कायस्थ हैं। कहीं इन्हें **कर्णम्** एवं कहीं इन्हें **नियोगी ब्राह्मण** के रूप में भी जाना जाता है। मूलतः यह चित्रगुप्त वंशीय 'कर्ण' कायस्थ ब्राह्मण हैं।

☛ नेपाल में विद्यमान कायस्थ भी कर्ण कायस्थ ब्राह्मण हैं।

☛ सिंध में विद्यमान कायस्थ जो कि सिन्धी कायस्थ कहलाते हैं। मूलतः यह चित्रगुप्त वंशीय कुलश्रेष्ठ कायस्थ ब्राह्मण हैं।

☛ महाराष्ट्र में विद्यमान कायस्थ, चन्द्रसेनीय कायस्थ ब्राह्मण हैं।

× × ×

ब्राह्मण वर्ण के अन्तर्गत आने वाली १० श्रेष्ठ जातियाँ

सृष्ट्यारंभे ब्राह्मणस्य जातिरेका प्रकीर्तिता।

सृष्टि के प्रारम्भ में ब्राह्मणों की एक ही जाति बतायी गयी है।

एवं पूर्वे जातिरेका देशभेदा द्विधाऽभवत्।
गौड द्राविड भेदेन तयोर्भेदा दश स्मृताः।

पूर्व की यह जाति देश के भेद से दो भाग में विभक्त हो गयी। **गौड** एवं **द्रविड** के भेद से यह १० प्रकार के बताये गये हैं।

गौडा सारस्वताः कान्यकुब्जा उत्कल मैथिलाः।
पञ्चगौडा इति ख्याता विंध्यस्योत्तर वासिनः।

१. गौड २. सारस्वत ३. कान्य-कुब्ज
४. उत्कल ५. मैथिल

ऊपर दिये गये **पञ्चगौड** ब्राह्मण हैं, जो विंध्याचल के उत्तर में निवास करते हैं।

द्राविडाश्च तैलंगा कर्णाटका महाराष्ट्रकाः।
गुर्जराश्चेति पञ्चैवद्राविडा विंध्यदक्षिणे।

(ब्राह्मणउत्पत्तिमार्तण्ड)

१. द्रविड २. तैलंग ३. कर्णाटक
४. महाराष्ट्र ५. गुर्जर

ऊपर दिये गये **पञ्चद्रविड** ब्राह्मण हैं, जो विंध्याचल के दक्षिण में निवास करते हैं।

☞ **पञ्चगौड ब्राह्मण** में दिये गये **'गौड'**, भगवान् चित्रगुप्त के १२ पुत्र हैं। यह गौडब्राह्मण भारत के १० उच्च ब्राह्मणों में से एक हैं।

☞ **पञ्चगौड ब्राह्मण** में **'कान्य-कुब्ज'**, कान्य ऋषि के वंशज—**कान्यकुब्ज** तथा कुब्ज ऋषि के वंशज—**सरयूपारीण** ब्राह्मण हैं।

कान्य एवं **कुब्ज ऋषि गौड जाति के थे,** इसलिये इनके वंशजों की मूल पहचान **सरयूपारीणगौड** तथा **कान्यकुब्जगौड** के रूप में है। ये गौड होने के कारण उत्तर भारत के १० उच्च ब्राह्मणों में से एक हैं।

अन्य ब्राह्मण जातियाँ

इनके अलावा—अहिवासी ब्राह्मण, अनाविल ब्राह्मण, अष्टाश्रम अय्यर ब्राह्मण, अर्वतोकालु ब्राह्मण, अउदिच्य ब्राह्मण, बबुरक्कम स्मार्त ब्राह्मण, बदग्नाडु स्मार्त ब्राह्मण, **बारेन्द्र ब्राह्मण (बंगाली),** बसोत्रा ब्राह्मण, बेयाल ब्राह्मण, भार्गव ब्राह्मण, **भूमिहार ब्राह्मण,** बाल ब्राह्मण, बृहत्चरनम अय्यर ब्राह्मण, **ब्रह्मभट्ट ब्राह्मण,** दैवज्ञ ब्राह्मण, देशस्थ ब्राह्मण, देवरूखे ब्राह्मण (कोंकण), धीमा ब्राह्मण, इम्ब्रांथिरौ ब्राह्मण (केरल), ब्राह्मण, गुरूक्कल या शिवाचार्या ब्राह्मण, हव्यका ब्राह्मण, हेब्बर अयंगर ब्राह्मण, होयसाला, जिजहोतिया ब्राह्मण, कन्डावरा ब्राह्मण, कारहदा या कराणे ब्राह्मण (महाराष्ट्र), **कश्मीरी ब्राह्मण,** केरला अय्यर ब्राह्मण, खजूरिया या डोगरा ब्राह्मण (जम्मू), खन्डेलवाल ब्राह्मण, खेडवाल ब्राह्मण, कोंकणस्थ या चित्तपावन ब्राह्मण, कोटा ब्राह्मण, कोटेश्वरा ब्राह्मण, कुडलेश्वर ब्राह्मण, मद्रास अयंगर ब्राह्मण, माधवा ब्राह्मण, मान्डव्यम अयंगर ब्राह्मण, मोध ब्राह्मण, मोहयल ब्राह्मण, मुलुकनाडु ब्राह्मण, **नागर (नाग) ब्राह्मण,** नम्बूदिरी ब्राह्मण, नन्दीमुख या नन्दवाना ब्राह्मण, नर्मदेव या नर्मदिया ब्राह्मण, नेपाली ब्राह्मण, पाडिया ब्राह्मण, पालीवाल ब्राह्मण, पंगोत्रा ब्राह्मण, पोट्टी ब्राह्मण (केरल), पुष्करण ब्राह्मण, राहरी ब्राह्मण (बंगाल), ऋग्वेदी देशस्थ ब्राह्मण, सदोत्रा ब्राह्मण (जम्मू), **शाकलद्विपीयब्राह्मण,** सकलपुरी ब्राह्मण, **सनाढ्य ब्राह्मण,** सांकेती ब्राह्मण, सिरिनाडू स्मार्त ब्राह्मण, श्रीमाली ब्राह्मण, शिवाल्ली ब्राह्मण, स्थानिक ब्राह्मण, तेनकलाई अयंगर ब्राह्मण, तुलुवा ब्राह्मण, त्यागी ब्राह्मण, उप्पल ब्राह्मण, उलुचकम्मे ब्राह्मण, वदगलाई अयंगर ब्राह्मण, वदमा अय्यर ब्राह्मण, वैदिक या वैदिकी ब्राह्मण, वैष्णव ब्राह्मण, वथिमा अय्यर ब्राह्मण, यजुर्वेदीय देशस्थ ब्राह्मण इत्यादि, भारत में ब्राह्मण जातियाँ विख्यात हैं।

× × ×